इंद्रधनुष मछली

इंद्रधनुष मछली

बहुत दूर गहरे नीले सागर में एक मछली रहती थी. वह कोई साधारण मछली न थी. समूचे महासागर में वह सबसे सुंदर मछली थी. उसके शल्क अलग-अलग प्रकार के नीले और हरे और बैंगनी रंग के थे और उनमें कुछ शल्क तो चाँदी समान उज्ज्वल थे.

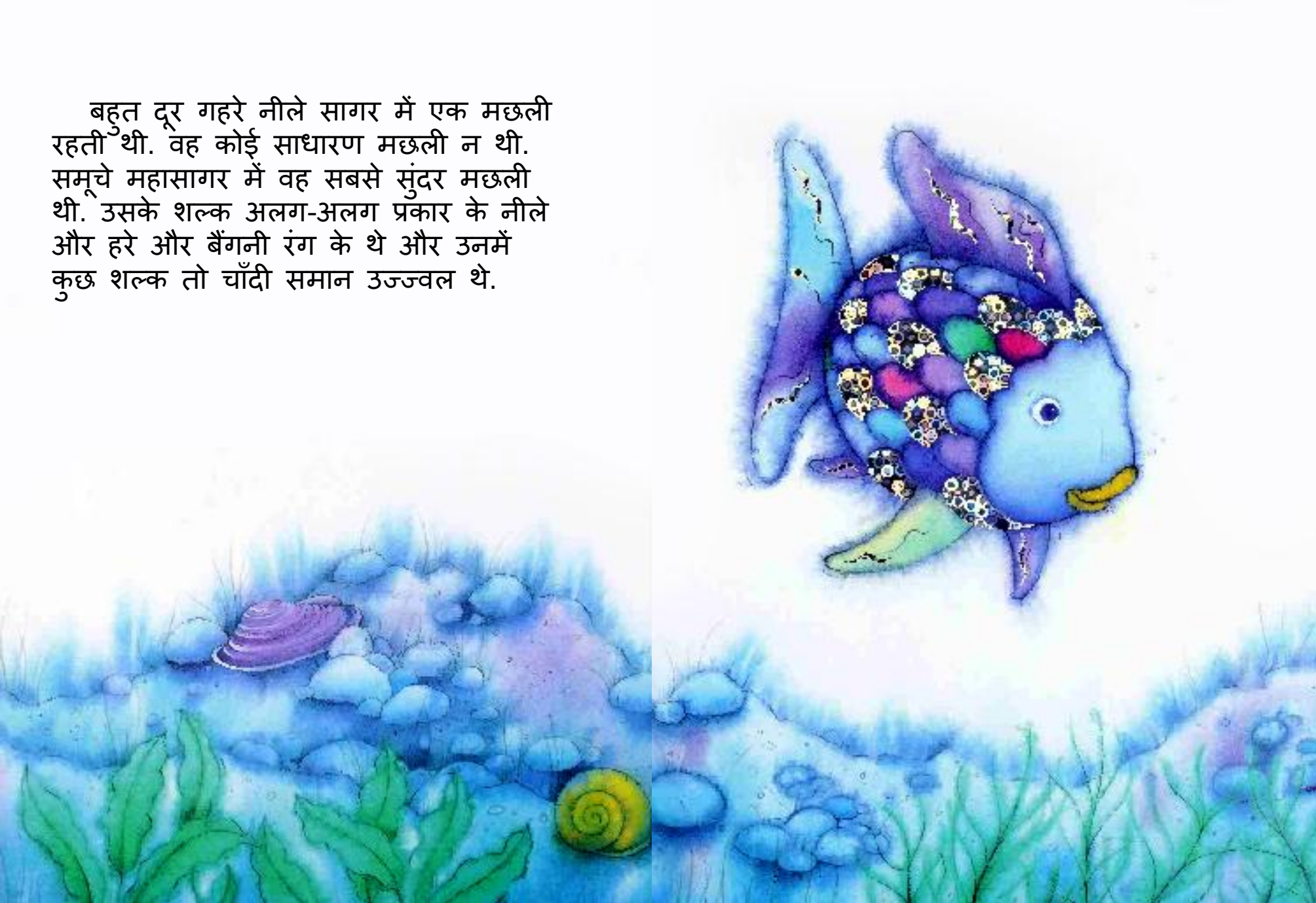

उसकी सुंदरता देखकर अन्य मछलियाँ आश्चर्यचकित हो जाती थीं. वह उसे इंद्रधनुष मछली के नाम से बुलाती थीं. “आओ, इंद्रधनुष मछली,” वह पुकारतीं, “आओ और हमारे साथ खेलो!” लेकिन अपने झिलमिलाते शल्कों का प्रदर्शन करते हुए इंद्रधनुष मछली बड़े गर्व से उनके निकट से निकल जाती और उनसे बात भी न करती.

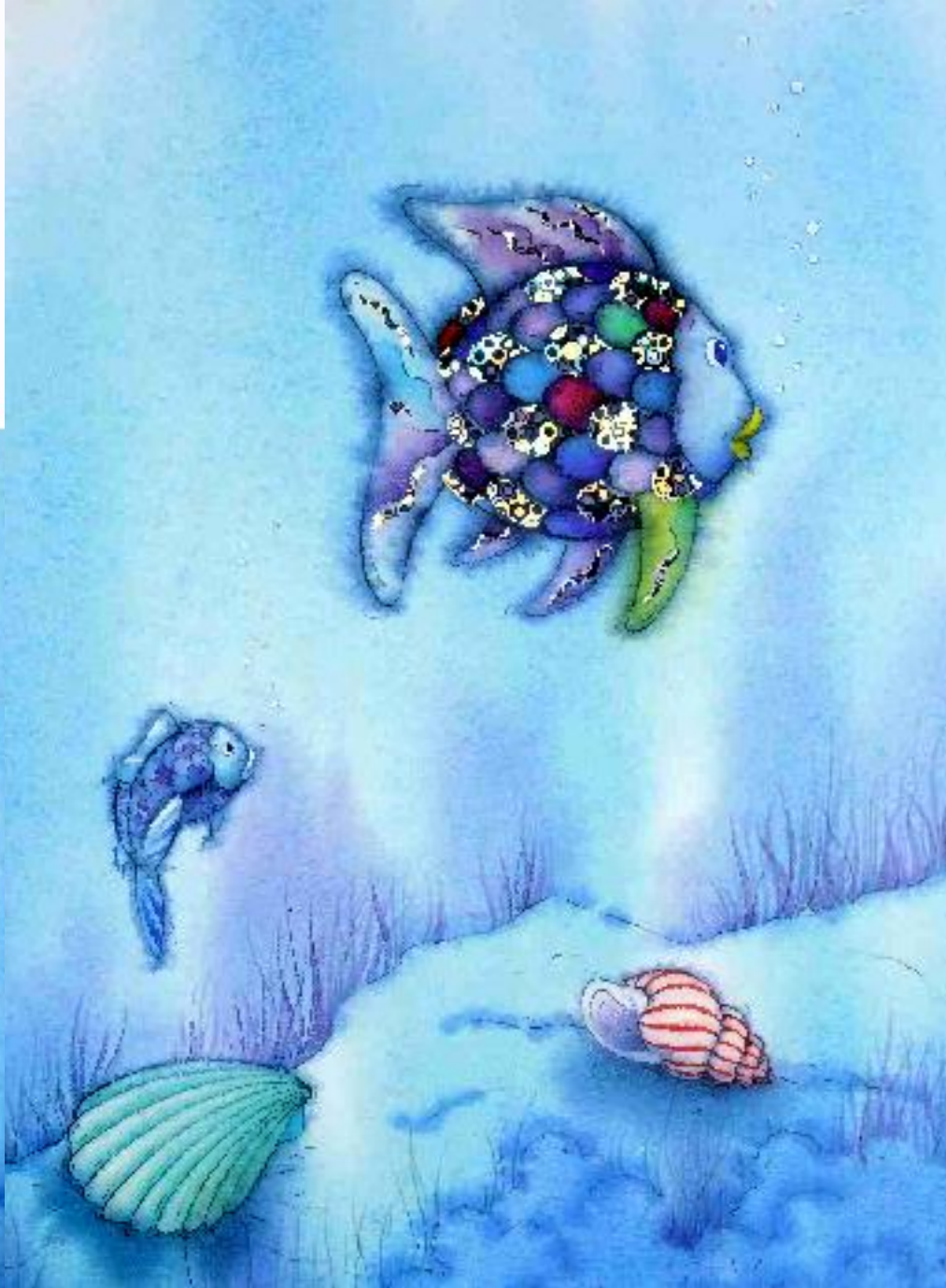

एक दिन एक नन्हीं नीली मछली उसके पीछे-पीछे आई. “इंद्रधनुष मछली,” नन्हीं मछली ने कहा, “मेरी प्रतीक्षा करो! अपना एक सुंदर, चमकीला शल्क मुझे दे दो. तुम्हारे शल्क इतने अद्भुत हैं और तुम्हारे पास तो यह बहुत सारे हैं.”

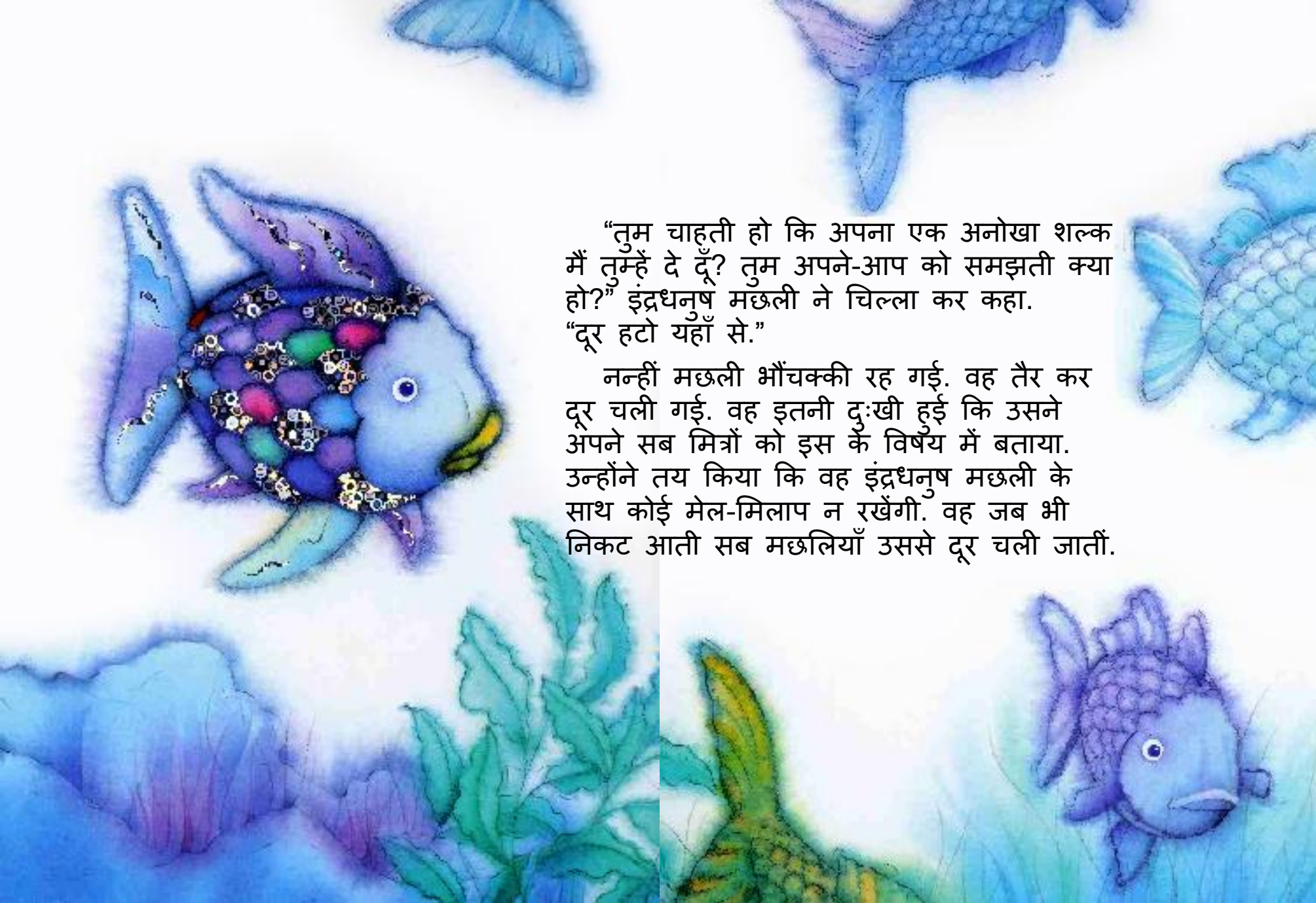

“तुम चाहती हो कि अपना एक अनोखा शल्क मैं तुम्हें दे दूँ? तुम अपने-आप को समझती क्या हो?” इंद्रधनुष मछली ने चिल्ला कर कहा. “दूर हटो यहाँ से.”

नन्हीं मछली भौंचक्की रह गई. वह तैर कर दूर चली गई. वह इतनी दुःखी हुई कि उसने अपने सब मित्रों को इस के विषय में बताया. उन्होंने तय किया कि वह इंद्रधनुष मछली के साथ कोई मेल-मिलाप न रखेंगी. वह जब भी निकट आती सब मछलियाँ उससे दूर चली जातीं.

अगर कोई इनकी प्रशंसा ही न करे तो इतने झिलमिलाते, चकाचौंध कर देने वाले शल्कों का क्या लाभ? इंद्रधनुष मछली ने सोचा. अब समूचे महासागर में वह सबसे अकेली थी.

एक दिन उसने अपने मन की व्यथा स्टारफिश को कह सुनाई. “मैं सच में सुंदर हूँ लेकिन कोई मुझे पसंद क्यों नहीं करता?”

“मैं इस प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकती,” स्टारफिश ने कहा. “अगर तुम मूंगे की चट्टान के आगे स्थित गहरी गुफा में जाओगी तो वहाँ तुम्हें बुद्धिमान ऑक्टोपस मिलेगा. शायद वह तुम्हारी सहायता कर पाये.”

इंद्रधनुष मछली ने गहरी गुफा ढूँढ ली. गुफा के भीतर बहुत अँधेरा था और उसे कुछ दिखाई न दे रहा था. फिर अचानक उसे दो चमकती हुई आँखें दिखाई दीं और उस गहन अंधकार से ऑक्टोपस बाहर आ गया.

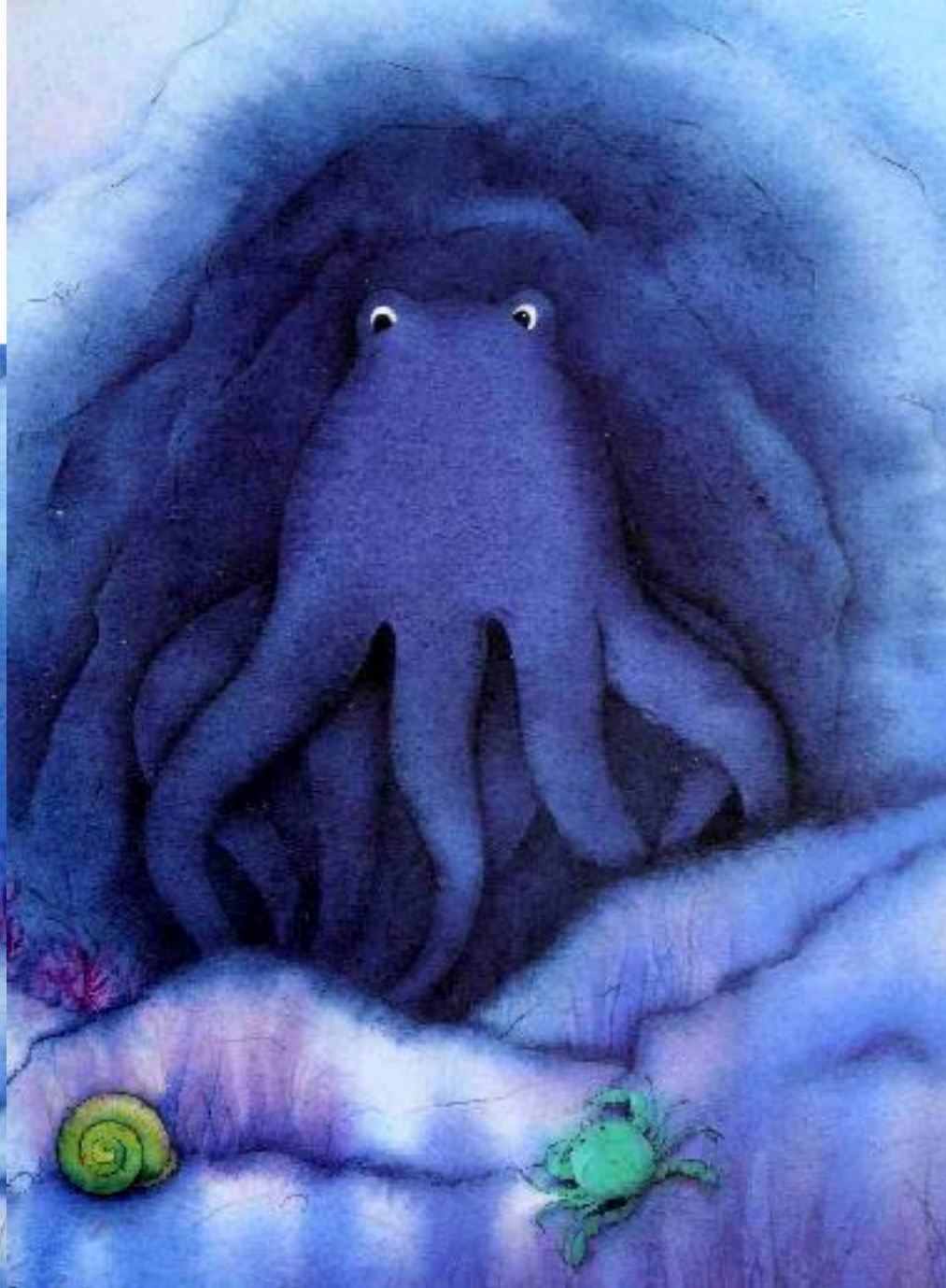

“मैं तुम्हारी ही प्रतीक्षा कर रहा था,” ऑक्टोपस ने संजीदा आवाज़ में कहा. “सागर की लहरों ने मुझे तुम्हारी कहानी सुना दी है. मेरा यह परामर्श है. हर मछली को अपना एक झिलमिलाता हुआ शल्क दे दो. तुम सागर में सबसे सुंदर मछली तो न रहोगी, पर तुम समझ जाओगे कि तुम किस प्रकार प्रसन्न रह सकती हो.”

“मैं ऐसा नहीं कर सकती,” इंद्रधनुष मछली कहने लगी लेकिन ऑक्टोपस तो गुफा के अंधकार में पहले ही गायब हो गया था.

अपने शल्क दे दूँ? अपने झिलमिलाते, सुंदर शल्क? कभी नहीं. उन के बिना मैं कैसे प्रसन्न रह सकती हूँ?

अचानक उसे लगा कि कोई उसे हौले से छू रहा था. छोटी नीली मछली फिर वापस उसके पास आ गई थी.

“इंद्रधनुष मछली, क्रोध न करो. मुझे बस एक छोटा सा शल्क चाहिए.”

इंद्रधनुष मछली हिचकिचाई. सिर्फ एक बहुत-बहुत छोटा झिलमिलाता शल्क, उसने सोचा. अरे, एक छोटे से शल्क की कमी मुझे न खलेगी.

बड़े ध्यान से इंद्रधनुष मछली ने सबसे छोटा शल्क निकाला और नन्हीं नीली मछली को दे दिया.

“धन्यवाद! बहुत-बहुत धन्यवाद!” नन्हीं नीली मछली ने प्रसन्नता से कहा और झिलमिलाता शल्क अपने नीले शल्कों के बीच लगा दिया.

इंद्रधनुष मछली को एक अद्भुत अहसास हुआ. वह देर तक नन्हीं नीली मछली को प्रसन्नता से पानी में इधर-उधर तैरते हुए देखती रही. नन्हीं मछली का नया शल्क चमक रहा था.

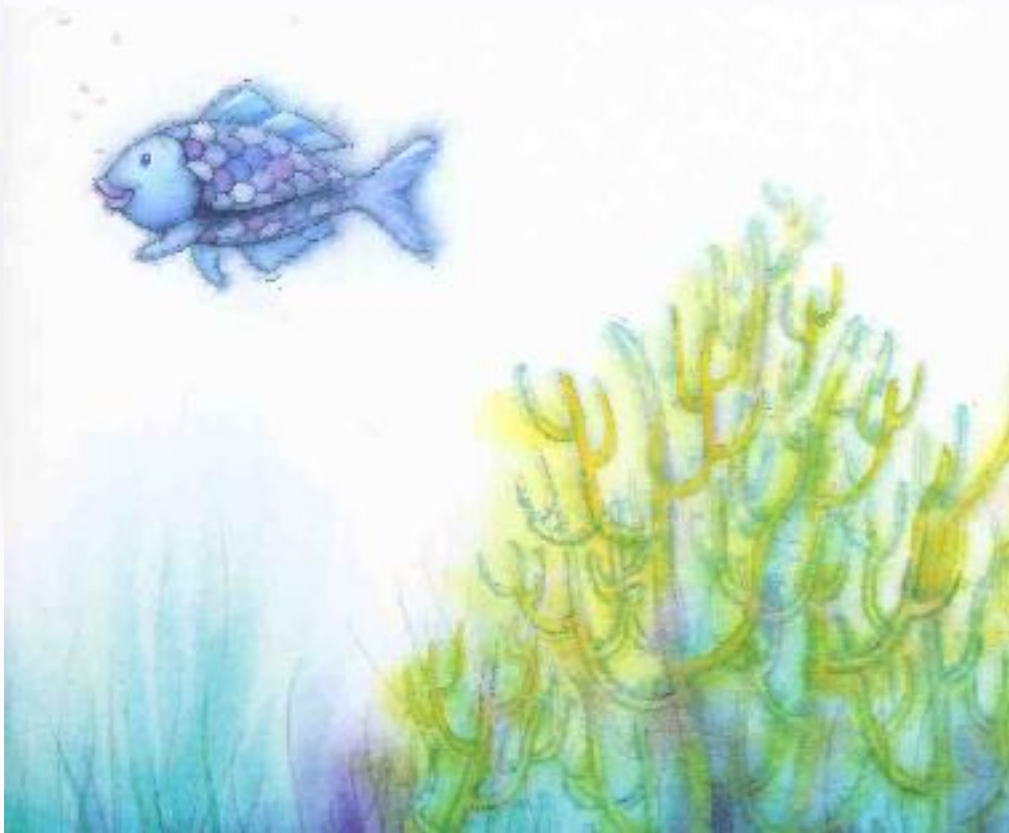

अपने चमकते हुए शल्क के साथ नन्हीं मछली सागर में तेज़ी से दूर तक तैरती चली गई और शीघ्र ही इंद्रधनुष मछली अन्य मछलियों से घिर गई

हर एक को उसका एक चमकता हुआ शल्क चाहिए था. इंद्रधनुष मछली सब को अपने शल्क निकाल कर देती रही. जितने अधिक वह अपने शल्क निकाल कर देती उतनी ही उसकी प्रसन्नता बढ़ती जाती. जब उसके चारों ओर पानी में सुंदर, रंग-बिरंगे शल्क झिलमिलाने लगे तो उसे लगा कि उन मछलियों के बीच वह अति-प्रसन्न थी.

आखिरकार, इंद्रधनुष मछली के शरीर पर सिर्फ एक चमकीला शल्क ही बचा. अपनी सबसे मूल्यवान वस्तु उसने खुले मन से दूसरों को बाँट दी थी और ऐसा कर वह अति प्रसन्न थी.

“आओ, इंद्रधनुष मछली,” अन्य मछलियों ने कहा. “आओ हमारे साथ खेलो!”

“लो, मैं आ गई,” इंद्रधनुष मछली ने कहा और प्रफुल्लता से तैर कर अपने मित्रों के पास चली गई.

समाप्त